

DPN 6966

Title : वागीश्वर स्तोत्र  
दशबल स्तोत्र

VAGĪŚVARA STOTRA  
DASABALA<sup>VA</sup> STOTRA

Run. No. 7691

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymns

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 13.3 X 6.2

Folios 9

Lines ( in a page ) 5

✓  
Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

✓  
Scribe / donor

कृष्णान्द्ररत्नवज्राचार्य

✓  
Date: NS / SS / VS / KS 915

Ruler / place

✓  
Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

✓  
Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / Stain, incorrect spelling

Beginning, colophon, post-colophon :

↓  
ॐ नमो बुद्धाय नमः ॥ शगुस्वती णमहत्तये (सहस्रती नमस्तुभ्यं) .



समाप्ति वत्स / Colophon

इति श्री वागीश्वरं गुप्त (लोच) समाप्तः १/१८० श्री ३१५ अक्षरानां यो १५



सकायाय धवातल्लव्वाया सुत ॥ ७७ ॥

ॐ नमः



|                       |       |       |
|-----------------------|-------|-------|
| ॐ नमो भगवते वासुदेवाय | कृष्ण | मिथुन |
| दशमि                  | रुद्र | जा    |
| स्वामि                | फल    | शनि   |
| हृदय                  | स     | नि    |
| शब्दना                | कृष्ण | नक    |
| मरुजा                 | रुद्र | रजा   |



ॐ जीव ज सत्वा य ४॥ ज न का वि धन ॥  
क्र ५॥ स ग्य न क आ लिर जो, ग क  
ना स, न कर जो



15  
10  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ सिद्धिगन्धर्वकृत्, दिविभु  
विभुविचित्र, अग्रावाविजति, सुखमयिकृत, सु  
कृत्, नासि संवत्सराच्च न एतिगत्र उपांति, किं नैवा  
निदिष्टम् ॥ २ ॥ अयितद्विगतयज्ञ, अत्र निष्ठ  
द्विषाद्विगतकनकवर्ण, सुत्रवत्कायनां कृत्  
नयितयत्रिषु, सुप्रलभं पुत्रं श्री ॥ दसवत

5  
वनिष्ठं, सुप्रलभं पुत्रं ॥ ३ ॥ प्रदत्तं ज्ञानयिज्ञं, का  
याकृतं कांठं, अत्र नहि कसु, सुलता जालद्वय  
समस्तं इव नदां, उरुतल्लान्ति, दण्डवत  
असुत्रं सुत्रगता, नमो गङ्गा मीनं देव, सुकल  
उवनध्वं, लोकसिद्धि कस्य, स्वयितमन्  
जध्वना, अर्कं यानि स्वयं, दसवत ॥ ४ ॥



उदयगित्री तज विन्दु सा कदुतासु, सिमित्रनि  
कनहुंता चक्र त्रयी कप्यज्ञानालवियविमद  
लाल, सर्वथा सायि सुखा दसवल ॥ १ ॥ दितल  
दनसुनया शुभा तलन्की जगन्का कतिनभू  
वनरुचा सिर्वयैजमनिकु अविगतमदवांग  
सर्वथा सायि सुखा दसवल ॥ ३ ॥ युववउ

जवउक्का दसांकी धवक्रा, जयनियमकन  
हा, सामवदुयव मु, अमत्रकमलयानि सायि  
वक्रावृ सुता दसवत ॥ १ ॥ ॥ हिमगीनी साय  
गलसूर्यमरुयुविनिः प्रियननरुनदक्रा ॥  
वाद्यवर्माके जाय सरुगिनितात्रयूक्षा, सा  
यिसुजा ठिसुनिदजवत ॥ २ ॥ ॥ कतिनभू



ॐ स्तोत्र सप्त  
लिप्तया लि, दुर्किया दान, ... य नित्रयि  
तथा विबुध भारु रि, ... ज्ञायसु  
का का मयं के विमर्क, मल, ... वल x कुल्ल  
यदत्र नित्र यल्लुनिका यतः सुनत्रियेवत्र  
हृता विष्णु कर्त्तु यि, हृत्रियि चित्रसु  
का गह्वरा मलभू को दण्डवत्र x ॥ कृत्रियुड

फा रा निद्र रान नञाचाय



उत्पल्लोक उरुमहा मनिअत्र सहर्मयून  
दयनिर्द्धदह तनाग दुइव जनि यूपल डि  
यनिशुद्धः यत्पुन्यं समया क्रीतव नू मया  
दसहनयउ विनेयउ हवउ दसवनउसा  
हानयनमाशिकाः ॥ वृत्तिश्च फलवृद्ध

एतान्नकस्य दणवनाम कृत्तसमाय ॥



ॐ नमो ब्रह्मपुत्राय ॥ जगत्सुखं तिलमस्तु वं  
वज्रदंष्ट्रा कामरूपिणी विद्यालंका कर्त्री आभि  
जिहि रुविंदु मसदा ॥ १ ॥ जगत्सुखं तिल  
समुत्पन्नं सर्वद्वीपमानमा ॥ ४ ॥ कलूषि च ल  
त्रिनि सर्वजागी नमानमा ॥ २ ॥ तिर्याक

दिनि त्राक्षली तिर्यक्ता बलमानमा ॥ ३ ॥  
तिराक्षना विमंला विस्मृता लीला मानमा ॥ ४  
॥ ५ ॥ शुद्धं सुनिकत्रया येन अत्र यीतमा  
नमानमा ॥ सर्वदा कलाचक्रमुक्ता सर्वसिद्धि  
मानमा ॥ सर्वलालिप्तकामात्रि सर्वजागी



मानभाशा गत्त लीउ माद वीशा गन नदि  
लमानभाशा यद्व लहिय द्वा सि हं स नू पि  
लमानभाशा वृ क वि षु सि वा ०० वा वि न्दू ली नी  
लमानभाशा अ द्द च द्द ज ता ध नी य द्द वि ष्व म  
मानभाशा वा शु के व ल दायै श्व रु सा ०० श्व न भा

नभाशा म ह द वि म ह का लि म ह न श्री ल  
मानभाशा अ नू ल यि म ह नू पि वि ष्व नू पि न  
मानभाशा मू का नं क ल ह वां की मू ना ध नी न  
मानभाशा मू न मं तु ख लू या ये मू न श्व क्त ल  
मानभाशा क या नी क मी सु का ये क मी नि



15  
10  
5  
0  
5 10 15 20  
तलमानमाशा वदायी वडया ये वदानायेव  
मानमाशा लाना सा मुं सलया ये लाना दविल  
मानमाशा धलसुकि धलखली सवया गी लमा  
नमाशा दिव्य हलिलि जिफा ये दिव्य सकले  
लमानमाशा वडादि खजता धालि वडु विव

5  
0  
5 10 15 20  
लमानमाशा जा वाये जा वन्या ये जिव हानी  
लमानमाशा मना मगि महु द विवागी खनी  
लमानमाशा जग धनि जग क्रु जिजग धनी  
लमानमाशा गुल दाग्वा विवाग ह्या गुलति  
तलमानमाशा ॥ ॐ श्रीनिवागी ज्वलं उग्रं स  
माफशा मि संक वत र १५ वडाना ल्याक १६